हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, शिमला में दिनांक 17.09.2014 हितधारकों (Stakeholders) की एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में विभिन्न वर्गों जिसमें हिमाचल प्रदेश वन विभाग, उद्यान एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी, सोलन, ग्राम पंचायतें, महिला मण्डलों, स्वयं सहायता समूह एवं गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों एवं शोधकर्ताओं ने भाग लिया । कार्यशाला की अध्यक्षता हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के **निदेशक, डा॰ वी॰पी॰ तिवारी** ने की । संस्थान के **समूह समन्वयक (अनुसंधान) डा॰ के॰एस॰ कपूर** ने इस कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों/ गणमान्य व्यक्तियों व कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया और संस्थान में चल रही अनुसंधान

गतिविधियों से हितधारकों को अवगत करवाया । उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य यह है कि हितधारक वानिकी अनुसंधान से सम्बन्धित उनकी आवश्यकताएं संस्थान को बताएं ताकि संस्थान के वैज्ञानिक तदानुसार अनुसंधान करें ।

इस अवसर पर हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक, डा॰ वी॰पी॰ तिवारी ने कहा कि वानिकी विभिन्न क्षेत्रों में शोध व खोज की बहुत सम्भावनाएं है । संस्थान द्वारा प्रतिभागियों के मार्गदर्शन व सुझावों के अनुरूप अनुसंधान सम्बन्धित परियोजनाएं बनाई जायेगी, जो वानिकी क्षेत्र में निसन्देह कारगर साबित होगी ।

वानिकी संकायाध्यक्ष (Dean), उद्यान एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी, सोलन ने कहा कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान वानिकी-अनुसंधान के क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश और जम्मू व

कश्मीर में अहम भूमिका निभा रहा है, परन्तु जलवायु परिवर्तन विश्व स्तर एक बड़ी चुनौती है । इसके मध्यनजर उन्होंने उचित कृषि-वानिकी तकनीक विकसित करने के लिए बहुमूल्य सुझाव दिए ।

डा॰ टी॰एन॰ लखनपाल (सेवानिवृत प्राध्यापक, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला) ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में चिरकाल से एक व्यवस्थित कृषि-वानिकी प्रणाली है जो हमारी समाजिक इकाई का हिस्सा है । उन्होने सुझाव दिया कि संस्थान के वैज्ञानिकों को आज के दौर में बदली हुई परिस्थितियों को ध्यान में रखकर अनुसंधान परियोजनाएं बनानी चाहिए ।

हिमालयन रिसर्च ग्रुप से आए हुए डा॰ लाल सिंह, डा॰ मनजीत व महिला मण्डलों के प्रतिनिधियों ने कहा कि प्रदेश में पशु-चारे व बालन की एक गम्भीर समस्या है जिसके कारण विशेषतः ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर कुप्रभाव पड़ रहा है । उन्होंने इस दिशा में उचित अनुसंधान करके इस समस्या का यथाशीघ्र समाधान करने का सुझाव दिया ।

नौणी ग्राम पंचायत के प्रधान, श्री बलदेव शर्मा ने कहा कि संस्थान द्वारा गत वर्षों में चलाई गई पोलेनिया-परियोजना के अन्तर्गत उपलब्ध करवाए गए पोलेनिया प्रजाति के पौधे, चारे के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं, जिसकी उनकी पंचायत के लोगों ने

सराहना की है । उन्होनें संस्थान से आग्रह किया है कि भविष्य में भी इस तरह की परियोजनाएं हितधारकों के लिए कियान्वित की जाए ।

जिला शिमला से आए प्रगतिशील किसान श्री मेला राम शर्मा ने औषधीय पौधों के बारे में अपने अनुभव कार्यशाला में साझा किए । उन्होंने किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए औषधीय पौधों की खेती की तकनीकों को लोगों तक पहुंचाने का सुझाव दिया ।

कार्यशाला में उपस्थित डा० मिन्हास ने कृषि-वानिकी क्षेत्र में जैविक-खेती पर ज़ोर दिया और कहा कि इससे पैदावार बढ़ाने के साथ-साथ लोगों के स्वास्थय की भी रक्षा होगी ।

वन विभाग से आए अधिकारियों ने कार्यशाला में सक्रिय रूप से चर्चा में भाग लेते हुए

पौधशाला, पौधरोपण तकनीक, वन प्रबन्धन में अनुसंधान की आवश्यकता एवं बन्दरों से किसानों की फसलों को बचाने के लिए तेजी से उगने वाले फलदार पौधों की तकनीक विकसित करने जैसे मुद्दों पर महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए ।

संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं पर प्रस्तुति दी गई, जिन पर कार्यशाला में उपस्थित भागीदारों ने अपने-अपने सुझाव व परामर्श दिए, जो प्रस्तुत अनुसंधान परियोजनाओं के लिए भविष्य में कारगर सिद्ध होंगे ।

कार्यशाला के अन्त में श्री प्रदीप भारद्वाज, उप-अरण्यपाल ने इस कार्यशाला में आए सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया तथा आशा व्यक्त की कि कार्यशाला में विभिन्न हितधारकों द्वारा दिए गए सुझावों से अनुसंधान कार्यों को उचित दिशा मिलेगी ।

अमर उजाला 19 सितम्बर, 2014

अब एग्रो फॉरेस्ट्री पर होगा डॉक्यूमेंटेशन

- एचएफआरआई में स्टेक होल्डर्स ने दिए सुझाव
- हिमाचल में एग्रो फॉरेस्ट्री की अपार संभावनाएं

शिमला। प्रदेश में अब एग्रो फॉरेस्ट्री (कृषि वानिकी) पर डाक्यूमेंटेशन होगा। इससे प्रमाणिक रूप से पता चल पाएगा कि प्रदेश के किस हिस्से में एग्रो फॉरेस्ट्री कि तनी सफल रहेगी। एग्रो फॉरेस्ट्री कामर्शियल और ट्रेडिशनल दो तरह से होती है। प्रदेश में एग्रो फॉरेस्ट्री को लेकर अनुसंधान तो हुए हैं, लेकिन उन पर डाक्यूमेंटेशन न होने के कारण आम लोगों को फायदा नहीं मिल रहा है।

वीरवार को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी में स्टेक होल्डर्स (हित धारकों) की कार्यशाला में एग्रो फॉरेस्ट्री पर अनुसंधान कार्यों की डाक्यूमेंटेशन पर बल दिया।

वैज्ञानिकों का कहना है कि हिमाचल में भी किसानों को भी एग्रो फॉरेस्ट्री में कई संभावनाएं है। कार्यशाला में उद्यान एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी के डीन डा. जीएस सामेत ने कहा कि एग्रो फॉरेस्ट्री रिसर्च पर हिमाचल और जम्मू-कश्मीर में अहम भूमिका निभा रहे हैं। एचपीयू से सेवानिवृत प्रो. टीएन लखनपाल, हिमालयन रिसर्च ग्रुप से आए डा. लाल सिंह, डा. मनजीत व महिला मंडल प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार रखे। नौणी पंचायत प्रधान बलदेव शर्मा, ज़िला शिमला के प्रगतिशील किसान मेलाराम शर्मा ने औषधीय पौधों की खेती की तकनीक लोगों तक पहुंचाने का सुझाव दिया। डा. मिन्हास ने कृषि वानिकी क्षेत्र में जैविक खेती पर जोर दिया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. वीपी तिवारी ने कहा कि वानिकी के विभिन्न क्षेत्रों में शोध व खोज की बहुत संभावनाएं हैं। संस्थान के समूह समन्वयक अनुसंधान डा. केएस. कपूर ने भी विचार रखे। उप अरण्यपाल प्रदीप भारद्वाज वन विभाग, उद्यान एवं वानिकी विवि नौणी, सोलन, ग्राम पंचायतें, महिला मंडलों, स्वयं सहायता समूह एवं गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों एवं शोधकर्ताओं ने भाग लिया। ब्यूरो

हिमाचल दस्तक 19 सितम्बर, 2014

अनुसंधान में जलवायु परिवर्तन बड़ी चुनौती

हिमालयन अनुसंधान संस्थान में करवाई कार्यशाला में किया गया मंथन

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला
19.9.2014

हिमालयन फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट के तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला में मंथन करते वैज्ञानिक।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी में वीरवार को स्टैक होल्डरों की एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी की अध्यक्षता में किया गया। इसमें वन विभाग, उद्याान एवं वानिकी विवि नौणी, सोलन, पंचायत प्रतिनिधियों महिला मंडलों, स्वयं सहायता समूह एवं गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों एवं शोधकर्ताओं ने भाग लिया। डा. वीपी तिवारी ने कहा कि वानिकी के विभिन्न क्षेत्रों में शोध व खोज की बहुत संभावनाएं है तथा संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा हिताधारकों के सुझावों के अनुरूप अनुसंधान परियोजनाएं बनाई जाएंगी,जो वानिकी क्षेत्र में कारगर साबित होगी। संस्थान के समूह समन्वयक अनुसंधान डा. केएस कपूर ने संस्थान में चल रही अनुसंधान गतिविधियों से हितधारकों को अवगत करवाया। वानिकी संकायाध्यक्ष डीन उद्याान एवं वानिकी विश्वविद्याालय नौणी डा.जीएस सामेत ने कहा कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश और जम्मू व कश्मीर में अहम भूमिका निभा रहा है, परन्तु जलवायु परिवर्तन विश्व स्तर एक बड़ी चुनौती है। डा. टीएन लखनपाल ने कहा कि प्रदेश में चिरकाल से एक व्यवस्थित कृषि-वानिकी प्रणाली है जो हमारी समाजिक इकाई का हिस्सा है। हिमालयन रिसर्च रुप के डा.लाल सिंह, डा.मनजीत, महिला मंडलों के सदस्यों प्रदेश में पशु चारे व जलने वाली लकड़ी की कम की समस्या को उठाया और इस दिशा में उचित अनुसंधान करके इस समस्या का यथाशीघ्र समाधान करने का सुझाव दिया। इस मौके पर नौणी पंचायत के प्रधान बलदेव शर्मा, जिला शिमला से आए प्रगतिशील किसान मेला राम शर्मा ने भी अपने विचार रखे। कार्यशाला में उपस्थित डा.मिन्हास ने कृषि-वानिकी क्षेत्र में जैविक खेती पर जोर देते हुए इसकी पैदावार बढ़ाने का आह्वान किया। कार्यशाला के अंत में प्रदीप भारद्वाज, उप.अरण्यपाल ने इस कार्यशाला में आए सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया तथा आशा व्यक्त की, कि कार्यशाला में विभिन्न हितधारकों द्वारा दिए गए सुझावों से अनुसंधान कार्यों को उचित दिशा मिलेगी।

पंजाब केसरी 19 सितम्बर, 2014

पशुचारे व लकड़ी की कमी बनी समस्या

शिमला, 18 सितम्बर (तिलक): हिमाचल में पेड़ कटान व जंगल से जलाने के लिए लकड़ियां आदि लाने पर रोक से ग्रामीणों के समक्ष कई तरह की समस्याएं पैदा हो गई हैं। दूसरे साधनों की आसानी से उपलब्धता न होने की वजह से ग्रामीणों के समक्ष पशुचारे व जलाऊ लकड़ी का संकट गहरा रहा है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी द्वारा आयोजित हितधारकों की एकदिवसीय कार्यशाला में भी इस मसले पर चिंता व्यक्त की गई व ग्रामीणों ने अपना दर्द बयां किया। कार्यशाला में विभिन्न वर्गों जिनमें हिमाचल प्रदेश वन विभाग, उद्यान एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी सोनी, ग्राम पंचायतों, महिला मंडलों, स्वयं सहायता समूह एवं गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों एवं शोधकर्त्ताओं ने भाग लिया। हिमालयन रिसर्च ग्रुप के डा. लाल सिंह, डा. मनजीत व महिला मंडलों के प्रतिनिधियों ने कहा कि प्रदेश में पशुचारे व जलाऊ लकड़ी की उपलब्धता एक गंभीर समस्या है जिसके कारण विशेषतया ग्रामीण महिलाओं को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने इस दिशा में उचित अनुसंधान करके इस समस्या का यथाशीघ्र समाधान करने का सुझाव दिया।

औषधीय पौधों की खेती करने से बढ़ेगी आमदनी

(19.09.2014)

जिला शिमला के प्रगतिशील किसान गेला राम शर्मा ने औषधीय पौधों के बारे में अपने अनुभव व विचार बैठक में व्यक्त किए। उन्होंने किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए औषधीय पौधों की खेती की तकनीक को लोगों तक पहुंचाने का सुझाव दिया। कार्यशाला में उपस्थित डा. मिन्हास ने कृषि-वानिकी क्षेत्र में जैविक खेती पर जोर दिया और कहा कि इससे पैदावार बढ़ने के साथ लोगों के स्वास्थ्य की भी रक्षा होगी। कार्यशाला के अंत में उप अरण्यपाल प्रदीप भारद्वाज ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया तथा आशा व्यक्त की कि कार्यशाला में विभिन्न हितधारकों द्वारा दिए गए सुझावों से अनुसंधान कार्यों को उचित दिशा मिलेगी।